



कपडा निर्माण
(Fabric manufacturing)

By -

Dr. Aparna Shukla

Asst. Professor

D.G. P.G. College , Civil Lines , Kanpur

वस्त्र निर्माण के लिए रेशों से निर्मित धागों एवं सीधा रेशों का उपयोग करके भी अथवा बिना रेशों के उपयोग से भी विभिन्न विधियों अथवा प्रक्रियाओं द्वारा वस्त्र बनाया जाता है।

धागे से वस्त्र बनाने की चार विधियां हैं -



बुनाई

बुनाई से तात्पर्य एक ही गोले से दो फँदों को आपस में गंधकर वस्त्र बनाए जाने से है। अर्थात् एक ही धागे के फंदे बनाकर उन्हें आपस में गंधकर जो वस्त्र बनाए जाते हैं, वह प्रक्रिया बुनाई कहलाती है। बुनाई द्वारा बनाए गए कपड़े काफी लचीले होते हैं। बुनाई से अंतर्वस्त्र, टी-शर्ट, मोजे, स्वेटर आदि वस्त्र बनाए जाते हैं।





प्रक्रिया -

वस्त्र बनाने की इस विधि में दो धागे एक (lengthwise) ताना दूसरा (crosswise) बाना का उपयोग किया जाता है।

ताना - up to down (warp)

बाना - left to right (weft)

ताने एवं बाने के धागों को एक निश्चित क्रम में ऊपर नीचे करके वस्त्र बनाया जाता है। इस प्रक्रिया को बुनाई कहते हैं।

जहां से ताने के धागे बाने के ऊपर नीचे जाते हैं उन्हें किनारे या selvedge (वस्त्रों के किनारे) कहते हैं।

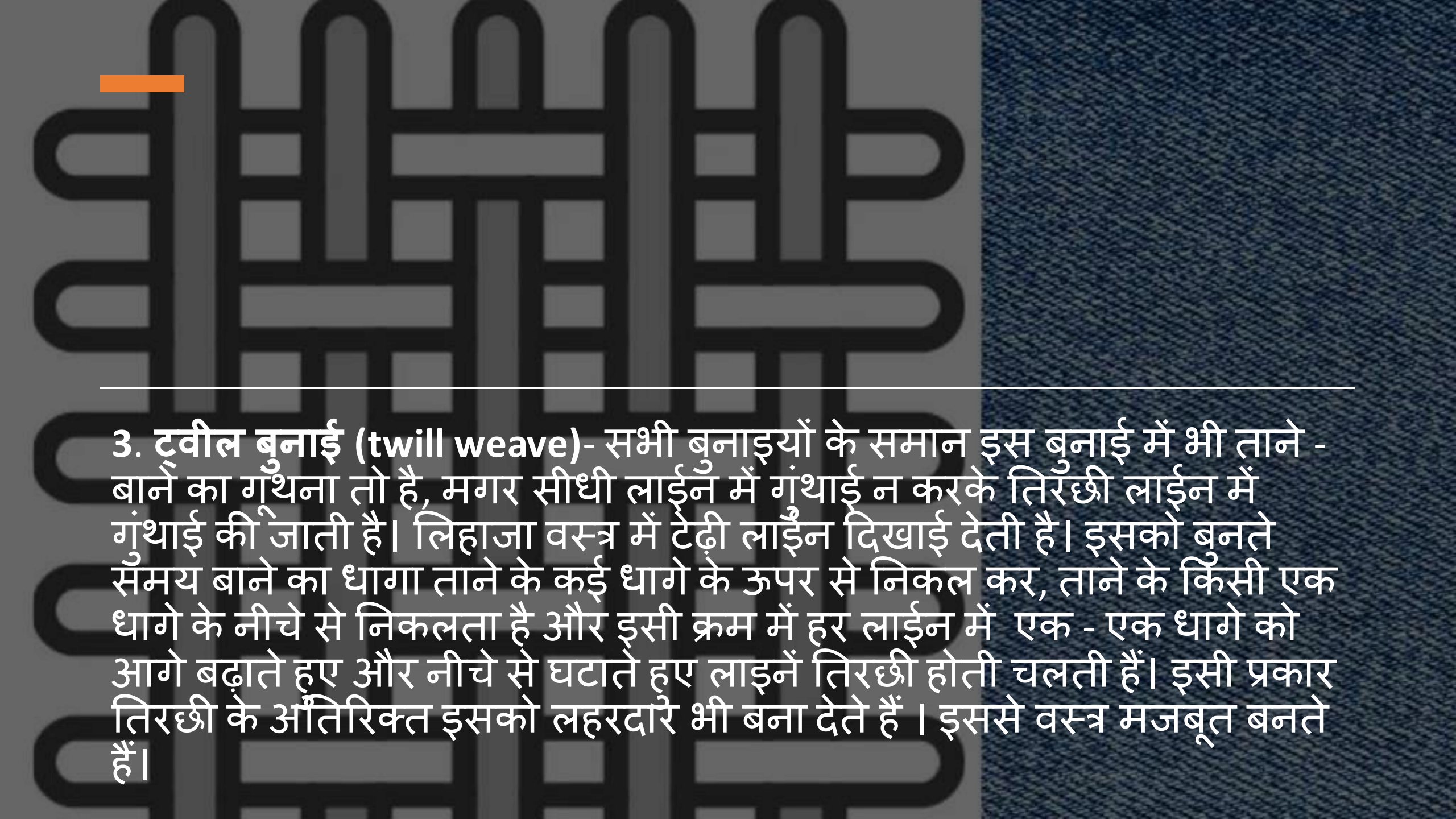
बुनाई के प्रकार

1. सादी बुनाई (plain weave) - सादी बुनाई एकदम सिंपल अर्थात बिल्कुल सादी। अर्थात ताना व बाना (warp and weft) को आपस में गंथना। ऐसी बुनाई हमेशा सघन होती है, मजबूत होती है तथा टिकाऊ होती है।



2. बास्केट बुनाई - यह बुनाई प्रायः मोटे कपड़े के लिए की जाती है। मोटे कपड़े जैसे परदे, रजाईयां, या सोफों के कवर, केसमेंट, मैटी, दसूती, आदि जैसे वस्त्र बनाने के लिए ताने व बाने में एक धागा मोटा तथा एक धागा पतला लिया जाता है। ताना पूर्ण के उपरांत बाना डालते समय ताने के दो तार तथा बाने के एक मोटे धागे द्वारा गंथाई शुरू करते हैं। यह बुनाई ढीली होती है। इसको इसी कारण बास्केट या टोकरी बुनाई का भी नाम दिया गया है।



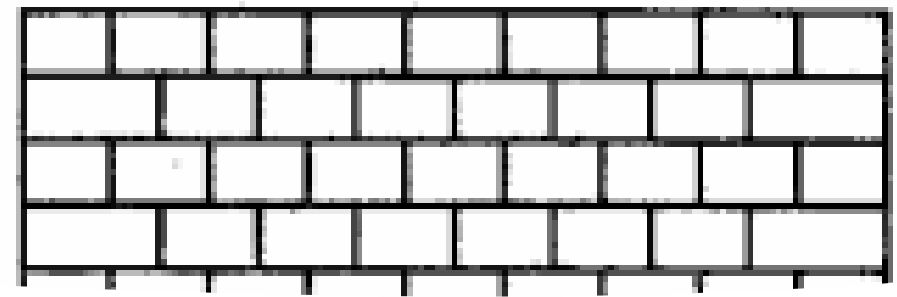
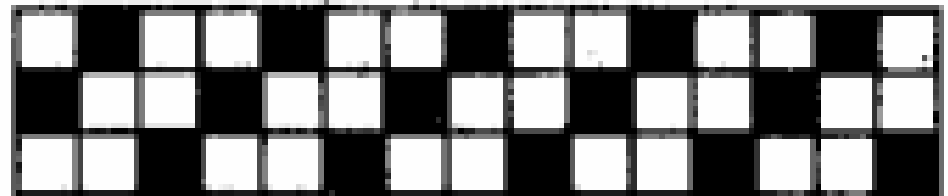
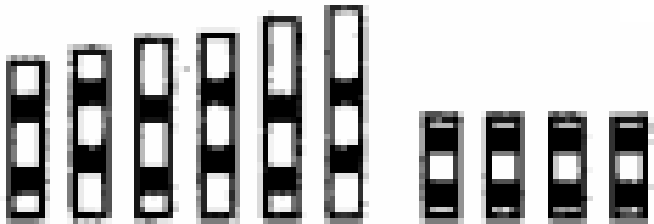
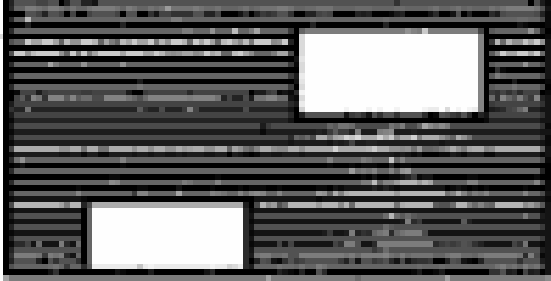


3. **टवील बुनाई (twill weave)**- सभी बुनाइयों के समान इस बुनाई में भी ताने - बाने का गंथना तो है, मगर सीधी लाईन में गंथाई न करके तिरछी लाईन में गंथाई की जाती है। लिहाजा वस्त्र में टेढ़ी लाईन दिखाई देती है। इसको बनते समय बाने का धागा ताने के कई धागे के ऊपर से निकल कर, ताने के किसी एक धागे के नीचे से निकलता है और इसी क्रम में हर लाईन में एक - एक धागे को आगे बढ़ाते हुए और नीचे से घटाते हुए लाइनें तिरछी होती चलती हैं। इसी प्रकार तिरछी के अतिरिक्त इसको लहरदार भी बना देते हैं। इससे वस्त्र मजबूत बनते हैं।



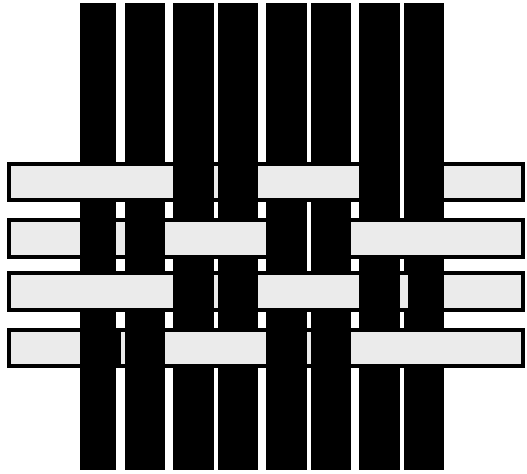
4. **साटिन बुनाई (satin weave)** - इस बुनाई में वस्त्र की सतह चिकनी बनती है। इस बुनाई के तरीकों में जो सतह चिकनी बनती है, वहां पर तानों के धागे के फ्लोट्स (floats) लंबे लंबे बनते हैं। बाने का धागा जो बहुत दूरी पर एक जगह फंसाया जाता है, वह वस्त्र की सतह पर बहुत कम दिखाई देता है।



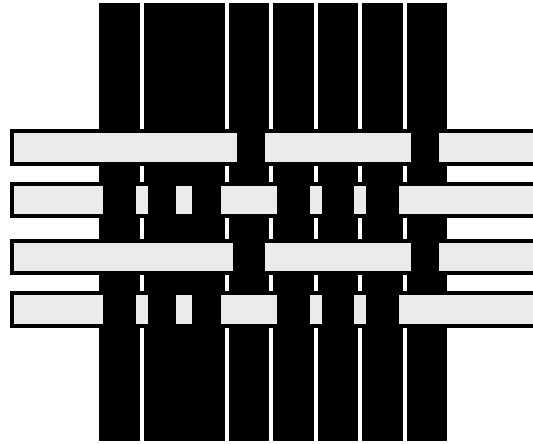


5. **सेटीन बुनाई (sateen weave)** - यह बुनाई साटिन से विपरीत होती है। इस बुनाई में बाने का धागा ताने के कई धागों के ऊपर से जाता है तथा किसी एक के नीचे से निकाला जाता है। इसमें इसीलिए बाने के धागे ही दिखाई देते हैं और ताने के छिप जाते हैं।

Weft rib Weaves-regular

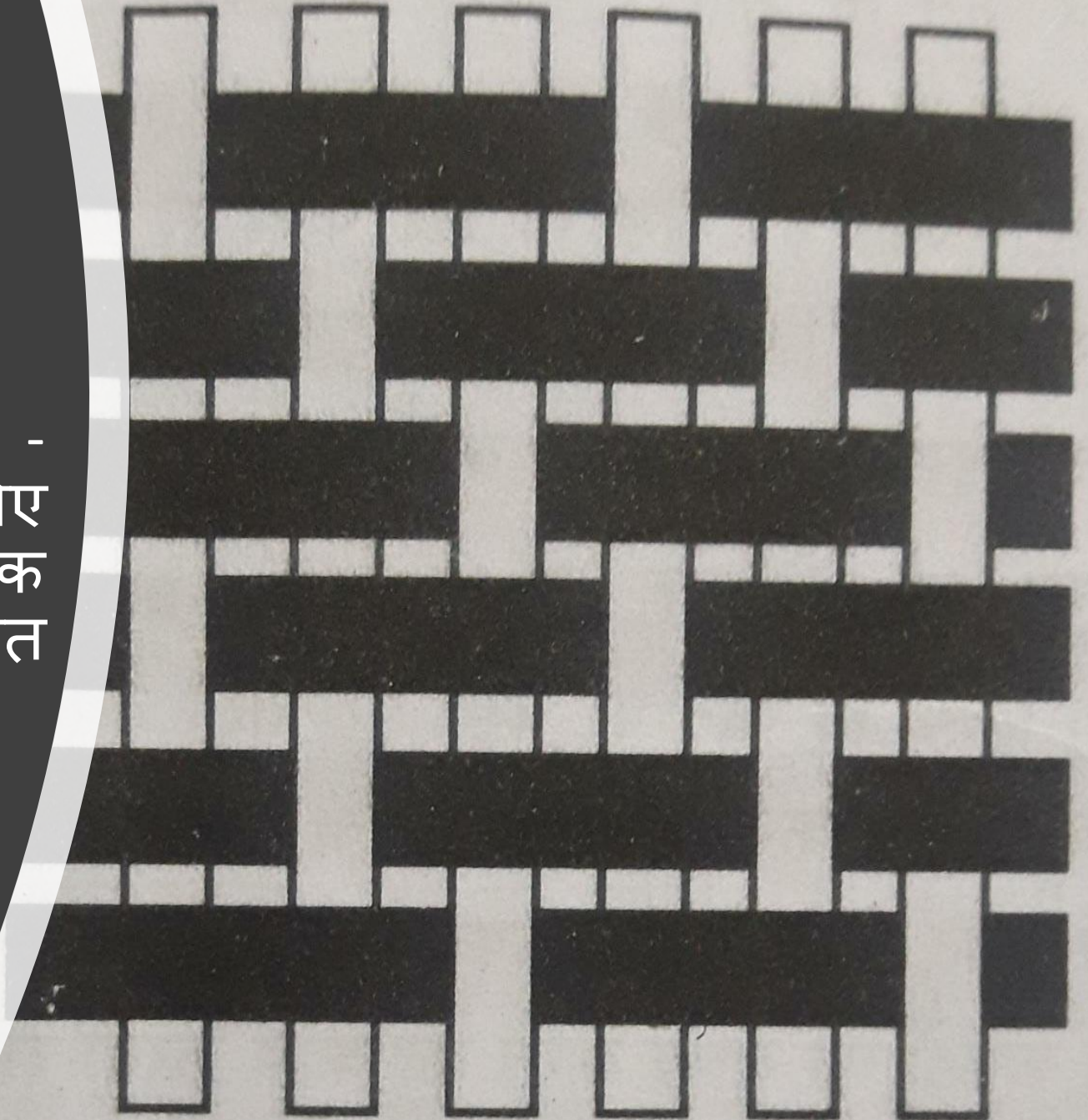


Weft rib Weaves-irregular




6. रिब बनाई (rib weave) - इस बनाई में कपड़े में धारियां सी बनी दिखाई देती हैं। ट्वील की बनाई के समान ही इसमें भी दू - तीन तथा एक बाना जो कि मोटा होता है उसकी गंथाई की जाती है। बनाई विधि इसके भी सादी बनाई की तरह होती है। जो धागा मोटा रखा जाता है वही धारियों के रूप में दिखता है।

7. हकबैक बुनाई (huckback weave) -
इस विधि का प्रयोग तौलिए बनाने के लिए
होता है। इस विधि में फ्लोट करते धागे एक
के बाद एक, नीची-नीची मेड़ बनाने से प्रतीत
होते हैं।



8. **हनीकाम्ब बुनाई** (Honey-comb weave) - ऐसे ही कपड़े अभी अच्छी क्वालिटी के तौलिये बनाने में होता है। इनमे भी ताने वाले फ्लोट तथा बाने वाले फ्लोट उठे हुए धागे अर्थात तैरते हुए धागों के समान दिखाई देते हैं।

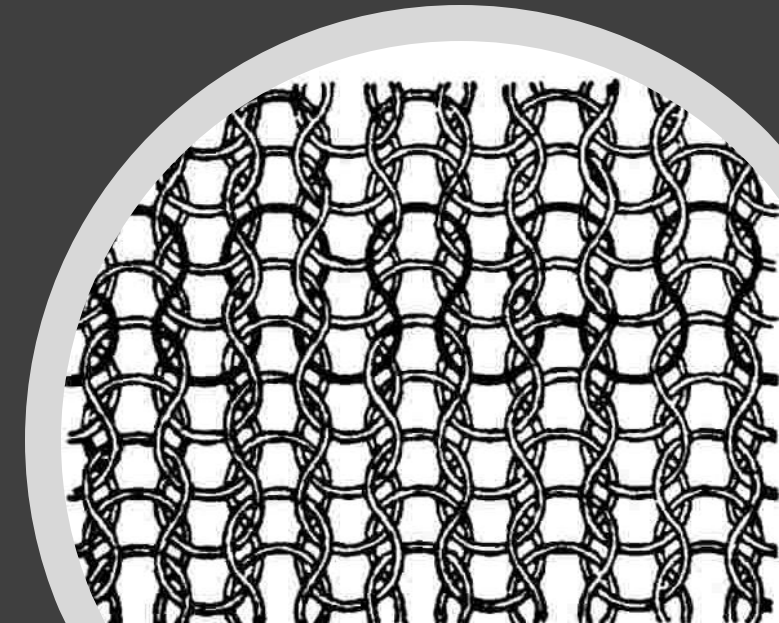
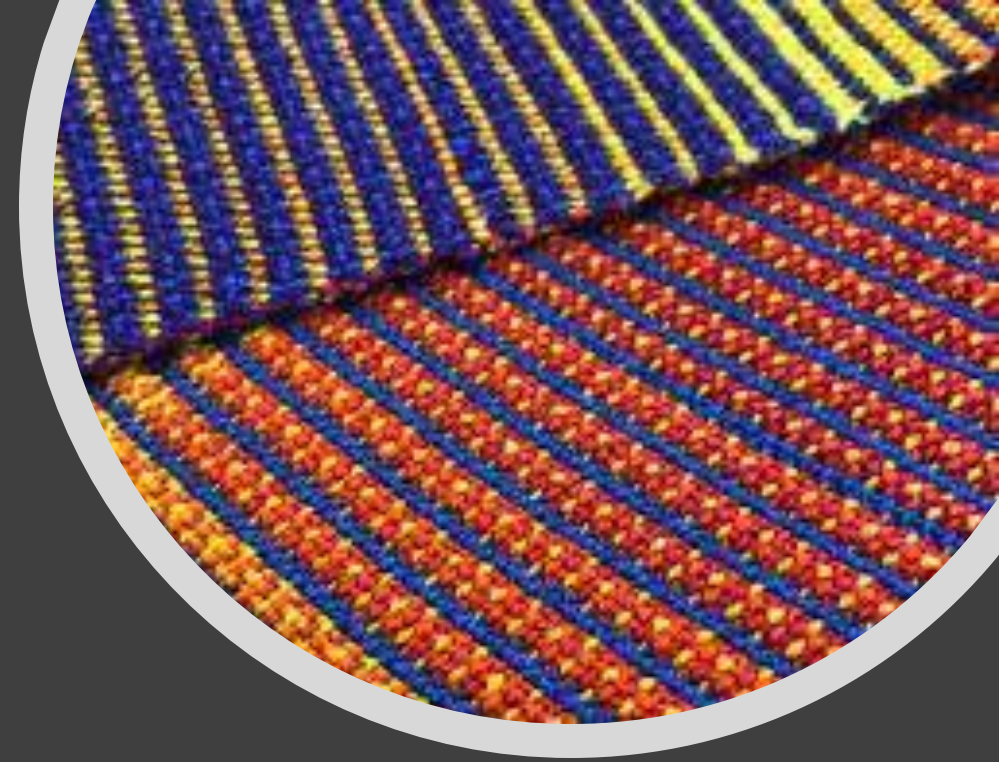


फैंसी बुनाइयां

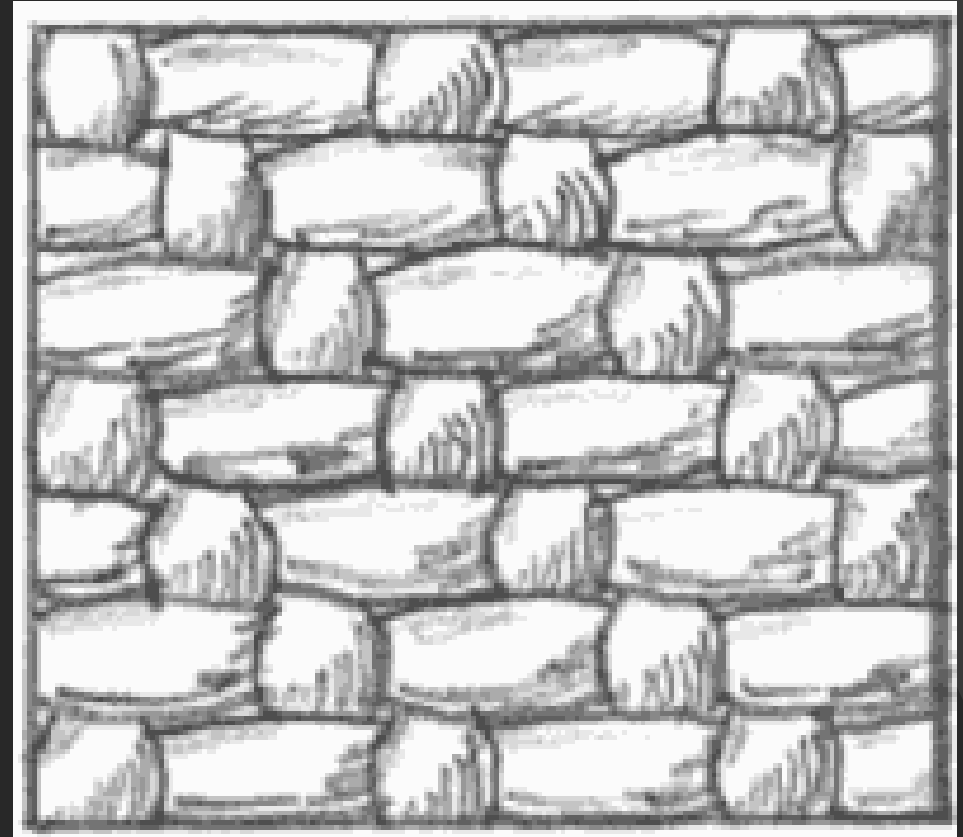
1. पाइल बुनाई (pile weave) - प्रायः पाइल बुनाई के वस्त्र गर्म होते हैं। इसमें तीन धागे अर्थात् ताना बना के साथ एक तीसरा धागा और चलता है जो स्थान - स्थान पर लूप्स (loops) छोड़ता जाता है। किन्हीं वस्त्रों में ऐसे अंगर के गच्छे से दिखते हैं तो किन्हीं में कट दिए जाते हैं और यह फर (fur) का रूप बन जाते हैं। यह वस्त्र मुलायम व गर्म दोनों की ही क्वालिटी वाले होते हैं।

2. डबल क्लॉथ बनाई (double cloth weave) - एक साथ डबल क्लॉथ प्राप्त करने के लिए ताने बाने के दो सैट लगते हैं और अलग - अलग बनते हुए इनको कहीं -कहीं तीसरे धागे से, जो बनाई में साथ - साथ चलता है, जोड़ दिया जाता है। ऐसे बने हुए वस्त्र दो तरफा होते हैं और दोनों तरफ से अलग - अलग रंग रूप के होते हैं, चाहे किधर से भी प्रयोग करें।

3. नेट बनाई - ये वस्त्र रासायनिक रेशों से तैयार करते हैं। इनमें जाली के से डिजाइन अर्थात् छिद्र - छिद्र होते हैं। इस बनाई से कुछ तोह पहनने योग्य, डिजाइन बनाने योग्य वस्त्र, परदे, सोफा के कवर, जाली वाले, मच्छरदानी का कपड़ आदि बनते हैं। रेशों को इस प्रकार फंसाया जाता है कि वस्त्र जाली का होने पर भी मजबूत बनते हैं।



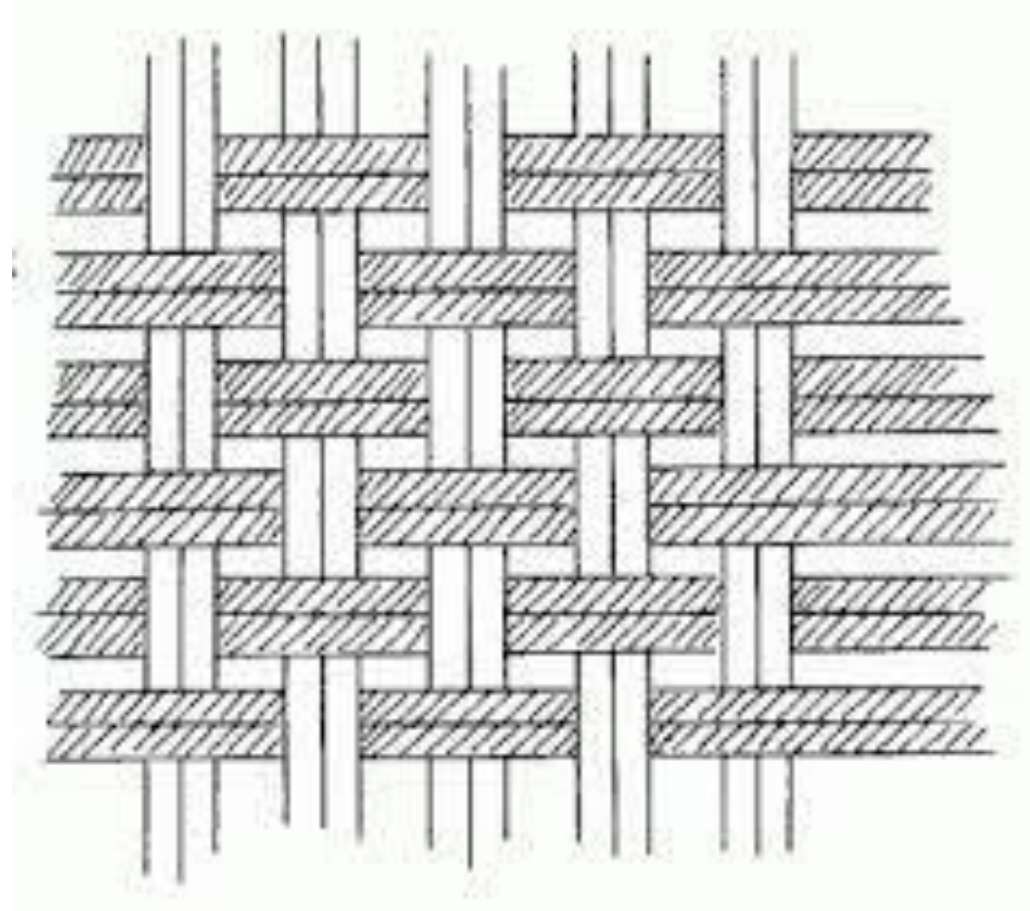
4. स्वीवल बुनाई (swivel weave)-बुनाई कपड़ों में सुंदरता व सजावट पैदा करने वाली है। इसमें बहुत से रंग लग सकते हैं। किंतु जितने रंग उतने ही शटल बुनाई हेतु भरने होते हैं। इस विधि से बनने वाले वस्त्र मजबूत नहीं होते हैं। क्योंकि कई रंगों के धागे को आपस में बिना फंसाए बुनते चले जाते हैं। धुलने पर सब तार तार निकल जाते हैं।



5. डॉबी बुनाई(Dobby weave) - इस विधि से ज्यामैट्रिकल डिजाइन वाले वस्त्र बनाए जाते हैं। इसे बनाने के लिए अधिक हार्नेस लगाने पड़ते हैं। करघे की छोटी पार्टियों के द्वारा ही यह सब डिजाइन बनाए जाते हैं। इन नमूनों में त्रिकोण, चौकोर, डायमंड, डबल डायमंड, जिग-जैग आदि नमूने बनाए जाते हैं।



6. जैकर्ड बुनाई (Jacquard weave) - इस बुनाई का आविष्कार जोजफनरी जैकर्ड ने किया था। उन्हीं के नाम पर इस बुनाई का नाम भी पड़ा। इस बुनाई द्वारा बहुत सुंदर व आकर्षक वस्त्र तैयार किए जाते हैं। ब्रोकैड, टेपेस्ट्री जैसे वस्त्र इसके उदाहरण हैं। इस बुनाई के लिए विशेष करघे होते हैं। यह महंगे एवं जटिल होते हैं। इस बुनाई में पशु पक्षी के चित्र या कोई विशेष आकृति जो भी बनानी हो। उससे ग्राफ पेपर पर बना लेते हैं। जिसे जैकर्ड कार्ड कहते हैं। करघे में लगी सुईया तथा हैंडल ताने के धागों को उठाते हैं। शटल द्वारा बनाने के धागों को चलाया जाता है।



नमदा बनाना (Felting)

यह रेशों को आपस में जोड़कर बनाया जाने वाला वस्त्र है। इस विधि का प्रयोग केवल ऊनी रेशों के साथ किया जाता है। क्योंकि इस विधि द्वारा वही रेशे प्रयुक्त किये जाते हैं जो खुरदुरा होते हैं, सिकुड़ते भी हैं, तथा पुनः अपनी अवस्था में आ जाते हैं। विशेष नमी पर इन रेशों पर दबाव डालने से यह आपस में उलझ जाते हैं, और चिपक जाते हैं, यह मजबूत हो जाते हैं। नमदा बनाने का कार्य हस्त चलित मशीन द्वारा किया जाता है। ऊन की सतह या फर् को गीली दशा में या भाप आपके सामने रगड़ा जाता है। तब रेशे एक दूसरे में मिश्रित हो जाते हैं। और नमदे का रूप धारण कर लेते हैं। रेशों की यह निकटता वस्त्र बनाने में सहायक सिद्ध होती है। इसमें रेशे दूसरे के साथ इतनी अधिक घने रूप में चिपक जाते हैं, कि उनमें पर्याप्त शक्ति आ जाती है। इस प्रकार के वस्त्र को सामान्य बुनाई द्वारा नहीं बनाया जा सकता!

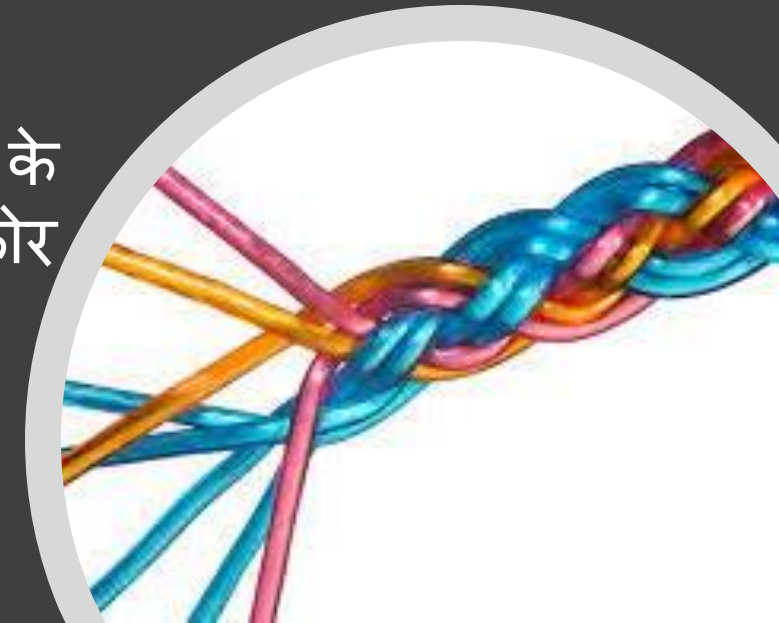
गूंथना ब्रेडिंग (Braiding)

यह भी वस्त्र उत्पादन का एक रूप है। इसमें तीन चार धागों को गूंथकर पतले, चपटे तथा गोलाकार फीते या पटिया बनाई जाती हैं। इसमें धागे को आपस में तिरछे व लम्बवत रूप में गूंथा जाता है और वस्त्र बनाए जाते हैं।

ब्रेडिंग के प्रकार - दो प्रकार के होते हैं -

1 . वृत्ताकार - (circular/Round Braids) - यह ट्यूबलर (Tubular) फॉर्म के होते हैं। जो बीच में खोखले होते हैं। इसमें किसी अन्य सामग्री का केंद्र कोर होता है।

2. चपटे ब्रेड्स (Flat Braids) - यह पतले, चपटी, संकीर्ण पतियों के रूप में होते हैं।



ब्रेडिंग में लंबे रेशों का प्रयोग किया जाता है। यह प्राकृतिक और सिंथेटिक फाइबर से बने होते हैं।

1. प्राकृतिक रेशे (Natural Fiber)- इसके अंतर्गत जूट, कपास, लिनन, कयर पआल आँग आदि रेशों का उपयोग किया जाता है।
2. सिंथेटिक रेशे (synthetic fiber) - इनमें नायलॉन, पॉली प्रोपीलिन, ग्लास आदि रेशों का उपयोग किया जाता है। इसकी अंतर्गत धातुओं के धागे स्ट्रॉ, चमड़ा आदि से बनाई जाते हैं।

सिंथेटिक फाइबर प्राकृतिक फाइबर की अपेक्षा अधिक मजबूत एवं टिकाऊ होते हैं।



synthetic fiber

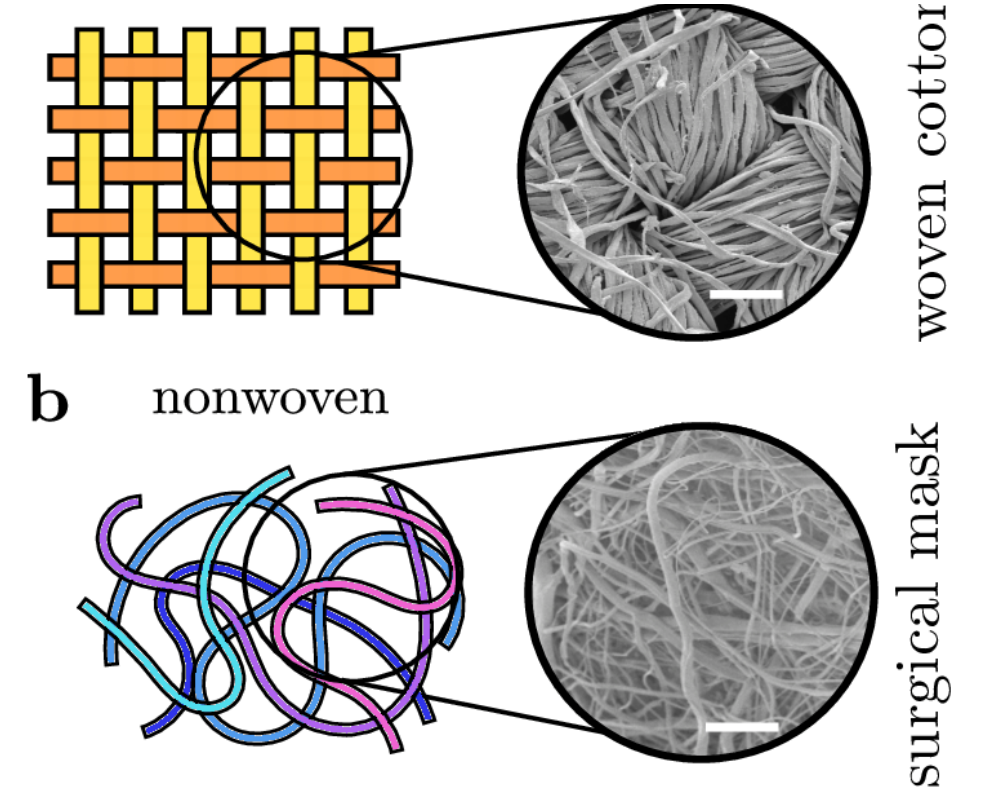
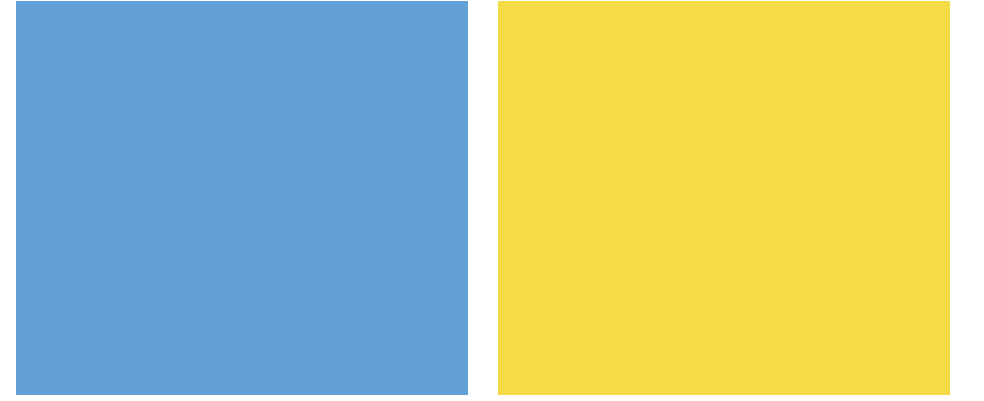


ब्रेडिंग का उपयोग

ब्रेडिंग का उपयोग घरेलू वस्त्रों से ज्यादा औद्योगिक क्षेत्रों में किया जाता है। इसका उपयोग सर्जिकल टांके, औद्योगिक बेल्ट, बिजली की तार, गलीचे, खेल के उपकरण, ड्राइव शाफ्ट, स्ट्रॉ, प्रोपेलर ब्लेड, लेस, मोमबत्ती की बत्ती, पैराशट की डोरियो आदि में अधिक प्रयोग किया जाता है। मछली पकड़ने का जाल, बिजली के तारों के कवर कई सजावटी सामान इसके द्वारा बनाए जाते हैं।

बिना बुने वस्त्र (Non-woven cloth)

कुछ वस्त्र बिना बुनाई के भी तैयार किए जाते हैं। इन्हें नॉन बुवन वस्त्र कहा जाता है। इस प्रकार के वस्त्रों को बनाने के लिए पतली चादर से दबाकर बनाये जाते हैं। कभी-कभी इसे जाल के रूप में भी बनाया जाता है। इस क्रिया में रेशों को प्लास्टिक के द्वारा आपस में सटाया जाता है। इसमें प्रायः कपास रेयॉन पोलिस्टर आदि को मिक्स करके वस्त्रों को बनाया जाता है। इन्हें मजबूती प्रदान करने के लिए प्रायः लंबे धागों का प्रयोग किया जाता है। रेशों को पहले अच्छी प्रकार से धुनाई कर लेते हैं, ताकि वे जाल के रूप में आसानी से फैलाए जा सकें। इस प्रक्रिया को कार्ड लैप (card lap) कहा जाता है।





**American
Society for
Testing and
Materials**

According to American Society
for testing and Materials

तंतुओ से निर्मित वस्त्र
जो कि " तंतुओ के बंधन
द्वारा आपस में जुड़े
रहते हैं और यह क्रिया
यांत्रिक रसायनिक
तापीय या घोलक विधि
के संयोगों द्वारा की
जाती है।"

निर्माण प्रक्रिया



इस प्रकार के वस्त्र के निर्माण के मुख्य तीन चरण हैं -



१- तंतुओ का चयन करना



२- तंतुओ का जाल बनाना और जाल से रोएँदार चादर या प्लीस बनाना



३- जाल या प्लीस को आपस में बाँधकर वस्त्र बनाना ।

तन्तुओ का चयन-

इस प्रकार के वस्त्र बनाने के लिए कॉटन , ऊन , एक्रिलिक , नायलॉन और पॉलिथीलीन आदि रेशों का प्रयोग किया जाता है ।



तंतुओं का जाल बनाना



इसके निर्माण के लिए निम्न तरीकों का प्रयोग किया जाता है -

- १- तंतुओं की समांतर बिछाई - तंतुओं को धनाई मशीन से निकालकर समांतर रूप से बिछाए जाता है। इस तकनीक से तैयार वस्त्र लंबाई की ओर अधिक मजबूत होते हैं।
- २- तंतुओं की आड़ी बिछाई - इसमें तंतुओं को मशीन से निकालने के बाद क्रिस क्रॉस रूप में बिछाया जाता है। इस तकनीक से तैयार वस्त्र समांतर बिछाई की अपेक्षा आड़ी स्थिति में अधिक मजबूत होते हैं।

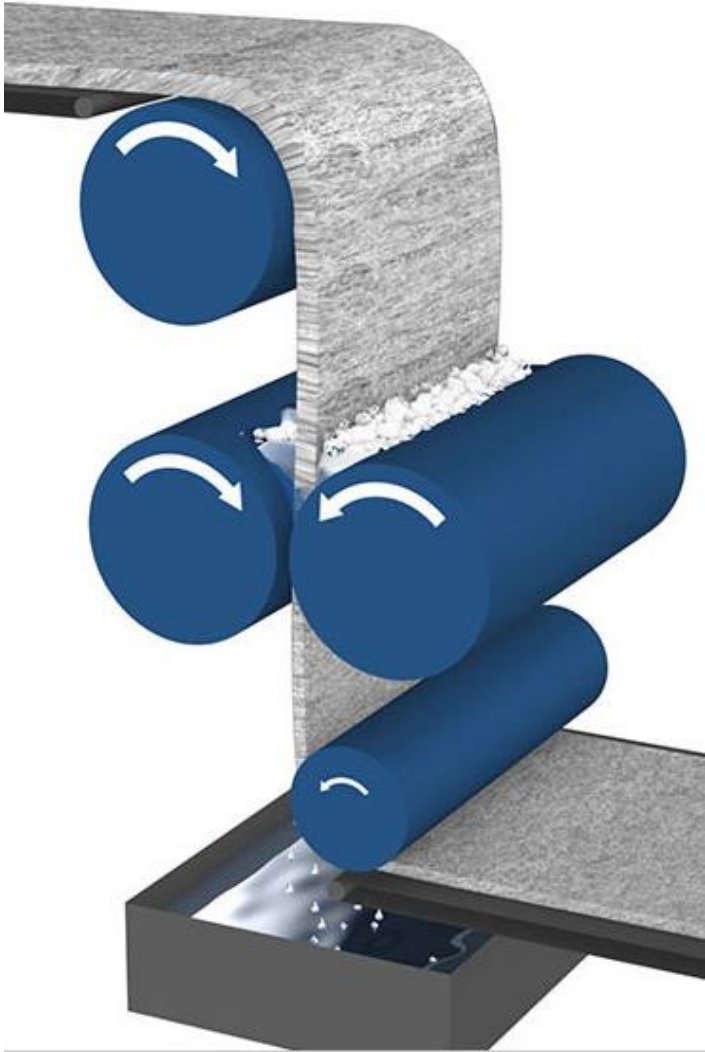
3- उच्च गति की तीव्र बौछार से बनाई गई जाल / वेब - इस तकनीकी का प्रयोग थर्मोप्लास्टिक तंतुओं हेतु किया जाता है। इन तंतुओं के बेल्ट के ऊपर बौछार द्वारा व बिछाया जाता है। जिससे एक क्रम हीन वेब तैयार होती है। ताप और दबाव द्वारा उन्हें फ्यूज कर देते हैं।


4- हवा द्वारा बिछाई गई वेब - तंतु को उच्च गति के हवा के बहाव द्वारा खींचा जाता है, और गतिशील स्क्रीन पर बहाया जाता है।

5 - गीले रूप में बिछाई गई वेब - यह विधि कागज बनाने की तकनीक पर आधारित है। इनमें तंतुओं की कुछ रसायनों के साथ मिश्रित किया जाता है। और फिर तार को स्क्रीन में से निकाला जाता है।

वेब या जाल को बाँधना (Bonding the web)

1. रेजिन द्वारा बाँधना - तंतु को बांधने हेतु रेजिन का उपयोग किया जाता है ।
2. स्पन बाँडिंग - पॉलिमर तन्तु को स्क्रीन या बेल्ट पर क्रमहीन रूप में जमाया जाता है। भौतिक और रासायनिक प्रक्रियाओं द्वारा बांधा जाता है ।
3. स्पनलेसड बाँडिंग - हवा द्वारा बिछाए गए तंतुओं को गतिशील स्क्रीन पर वायु के झोंकों से मोड़ा जाता है । जिससे तंतु आपस में उलझ जाते हैं , और लेस के समान डिजाइन में जुड़ जाते हैं ।
4. स्टिच हारा बाँडिंग - जाल की स्टिच द्वारा लेमिनेट करने के लिए थर्मोप्लास्टिक धागो का उपयोग किया जाता है।





5. सूई द्वारा बॉन्डिंग - बिना बुने वस्त्रों को तंतुओं की वेब में सूई डालकर भी बनाया जाता है। जैसे ही सूई वेब को पार करती है। वैसे ही तंतुओं पर नीचे की ओर दबाव पड़ता है। जिससे अनिश्चित क्रम में बिछाए गए तंतुओं के साथ वह उलझ जाती है। जब सूई को ऊपर खींचा जाता है तो यह और अधिक उलझ जाते हैं।

6. बिना बुने वस्त्रों की परिसज्जा -

१- वस्त्र निर्मित होने के बाद रंगाई की जाती है।

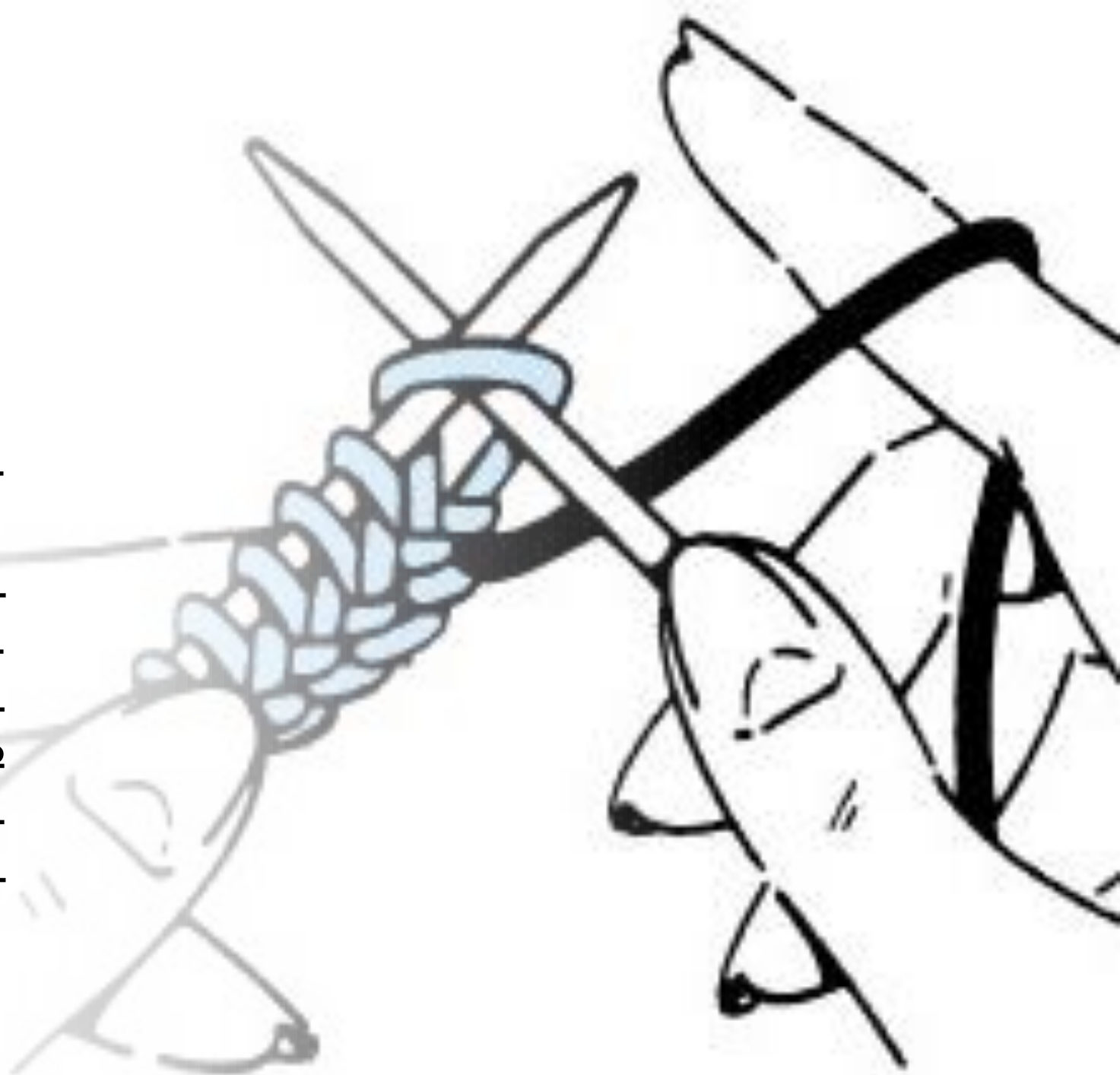
२- इनमें चिकने पन के लिए केलेण्डर्ड किया जाता है।

३- इन पर नक्काशी की जाती है।

४- इन पर छपाई भी की जाती है।

निटिंग (Knitting)

निटिंग विधि से वस्त्र निर्माण फंदे से फन्दे को निकालकर किया जाता है। इनमें केवल एक ही धागे से सलाइयो पर फंदे डालकर पुनः उन्ही फन्दो मे फंदा डालकर पुनः अगली पकित हेतु फन्दा निकाले जाते है। मशीन में बनाई हेतु एक या एक से अधिक धागों से भी फंदे बनाए जाते हैं। धागों की संख्या वस्त्र के नमने ,रंगों की विविधता, इत्यादि पर निर्भर करती है।





TYPES OF KNITTED FABRICS AND APPLICATIONS

निटिंग के प्रकार (Types of Knitting)

निटिंग का कार्य केवल एक धागे से अथवा अनेक धागों का उपयोग कर धागे से लूप बनाये जाते हैं। ये लूप धागे की दिशा के आधार पर निर्मित होते हैं। धागे के लूप जिस प्रकार से बनाये जाते हैं उसके आधार पर बुनाई प्रक्रिया को दो वर्गों में विभाजित किया जा सकता है-

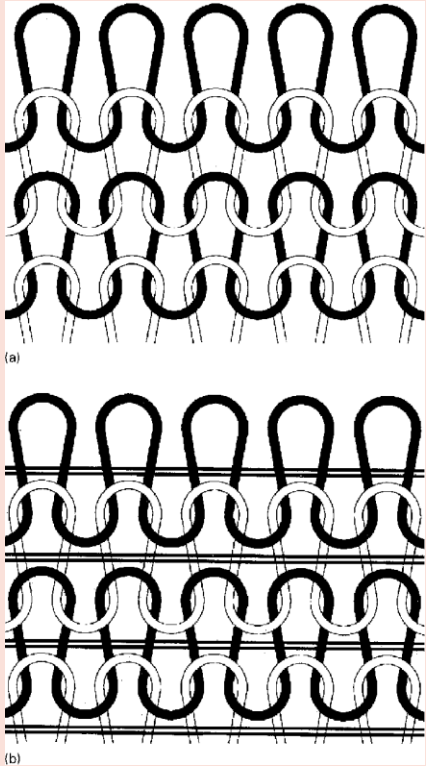


(1) वेफ्ट निटिंग या बाना बुनाई (Weft knitting)

इसका अनमान हाथ से की जाने वाली बुनाई का प्रयोग किया जाता है यह धागा क्षैतिज दिशा में बने भाग के आर-पार आता है। ये धागा बुनाई विधि से बाने में धागे के समान कपड़े की अनप्रस्थ रेखा के साथ चलता है। इसी कारण इसे वेफ्ट निटिंग कहा जाता है। यह बुनाई हाथ या मशीन दोनों से ही की जाती है। जिसमें धागा आर-पार एक ओर से दूसरी ओर तथा दूसरी ओर से इस ओर किया जाता है। ये निटिंग गोलाई में चक्राकार भी की जा सकती है। प्रायः घरों में बुनाई करते समय गले की रिब को हाई नेक गले को दोनों ओर से खली सलाइयों पर बनाते हैं और एक धागा चारों ओर घूमता है। मशीन से की जाने वाली गोल निटिंग भी इसी सिद्धान्त पर आधारित है।

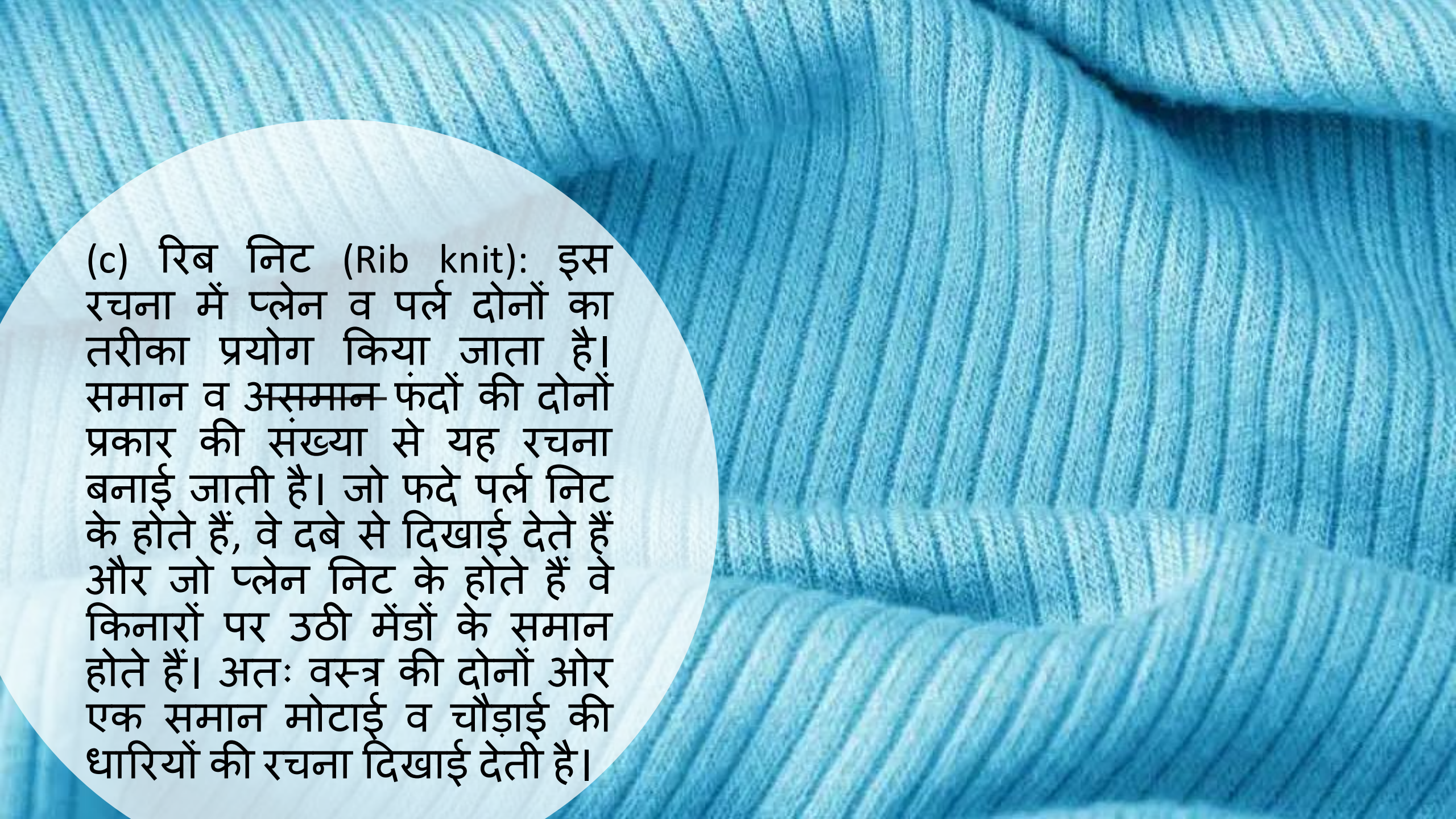
वेफ्ट निट के वस्त्रों में फन्दों के उधडने की अत्यधिक समस्या के कारण इसकी "लोकप्रियता में कमी आती रही है।

इसके तीन प्रकार होते हैं :



(a) प्लेन निट (Plain knit) : हाथ से बनाया जाने वाला सादा तरीका जिससे घरों में स्वेटर आदि तैयार किए जाते हैं।

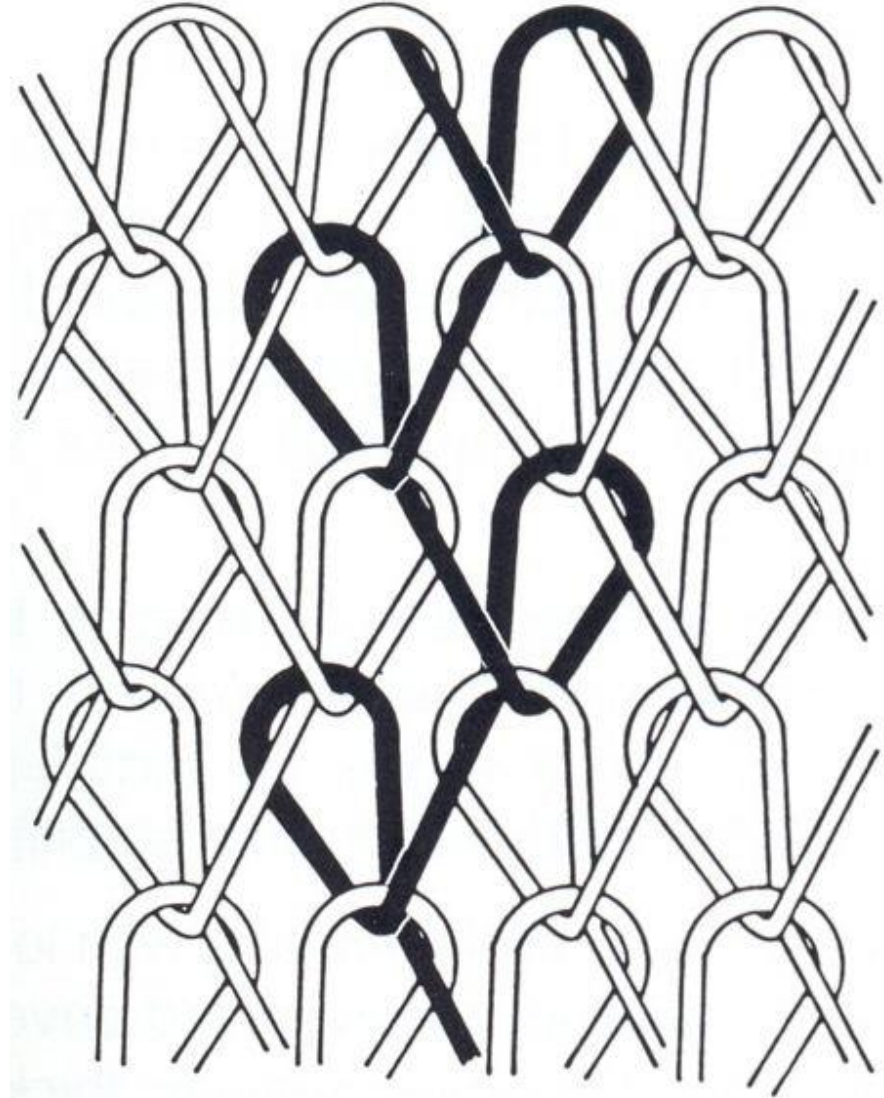
(b) पर्ल निट (Pearl knit) : इसमें भी प्लेन निट की तरह ही बनाया जाता है। इस रचना में वस्त्र लम्बाई में और किनारे घूमते नहीं हैं।



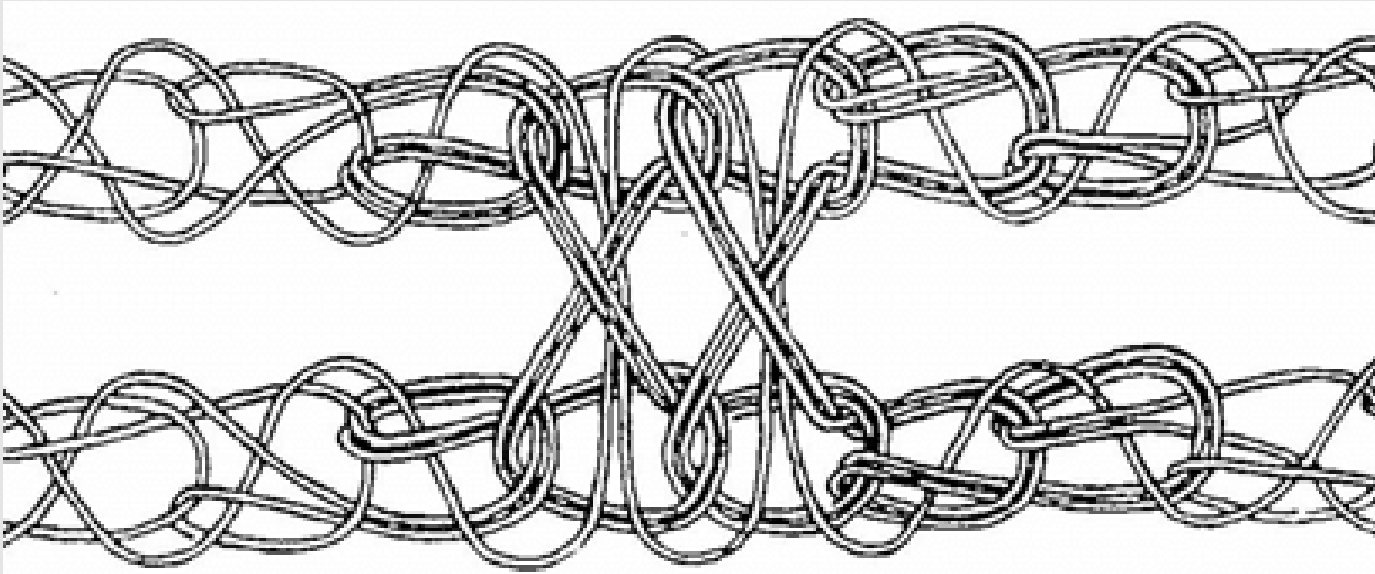
(c) रिब निट (Rib knit): इस रचना में प्लेन व पर्ल दोनों का तरीका प्रयोग किया जाता है। समान व असमान फंदों की दोनों प्रकार की संख्या से यह रचना बनाई जाती है। जो फंदे पर्ल निट के होते हैं, वे दबे से दिखाई देते हैं और जो प्लेन निट के होते हैं वे किनारों पर उठी मेंडों के समान होते हैं। अतः वस्त्र की दोनों ओर एक समान मोटाई व चौड़ाई की धारियों की रचना दिखाई देती है।

2. वार्ष निटिंग (Warp Knitting)

जैसे कपड़ा बनने के रेशे वार्ष बीम से क्लॉथ बीम तक तने रहते हैं, उसी प्रकार इसमें भी लम्बाई के धागे बीम से फंदे तक तने रहते हैं, इसीलिए इसे वार्ष निटिंग कहते हैं। इसमें हर फंदे के लिए अलग धागा तथा एक नीडल सब धागों के लिए होती है जो कि हाथ के काम में नहीं हो सकता है।



वार्प निटिंग के प्रकार (Types of Warp Knitting)



1) रेशेल (Raschel): रेशेल निट का वार्प निटिंग में ट्रिकों के बाद स्थान है। रेशेल निटिंग में फिलामेण्ट और स्टेप्ल दोनों प्रकार के यार्न का प्रयोग होता है। इसमें किरोशिए से बनी हुई खली जालीदार रचना से लेकर साधन एवं ठोस रचना के वस्त्र विभिन्न रूपों में बनाये जाते हैं। रेशेल से बने वस्त्रों का प्रयोग महिलाओं के परिधान पुरुष के सूट तथा खेल के कपड़ों में अधिक होता है। दरियाँ, कालीन, गलीचे लाउन्डी वेग, फिश नेट, ड्राई नेट, स्वीमिंग पुल कवर लैस करटेन नेट इत्यादि विभिन्न वस्त्र रेशेल निट से ही बनाये जाते हैं।

(2) मिलेनीज (Milanese) - मिलेनीज मशीन से उच्चकोटि के मजबूत वस्त्र बनाये जाते हैं। इसकी रचना अत्यन्त महीन होती है। इससे बने वस्त्र में पर्याप्त प्रत्यास्थता होती है। इस निटिंग से केवल दो प्रकार के स्टिच बनाये जाते हैं अतः इनसे केवल प्लेड एवं स्ट्राइप्ड डिजाइन ही बनाये जा सकते हैं। परन्तु इन डिजायनों से बने वस्त्र सुन्दर लभावने मनोहारी एवं आकर्षक होते हैं। खड़ी धारीदार होजरी वाले वस्त्र इसी बुनाई से बुने जाते हैं।

(3) ट्राईकोट (Tricot)- ट्राईकोट का शाब्दिक अर्थ होता है निट करना या बनाई करना। यह फ्रेंच शब्द ट्राईकोटर से व्युत्पन्न होता है। ट्राईकोट निटिंग मशीन द्वारा विविध रूपों में विविध नमनों एवं डिजायनों से युक्त वस्त्र बनाये जाते हैं। प्लेटींग के द्वारा इन्हें तरह-तरह का रूप दिया जाता है। इस मशीन से बने वस्त्र अत्यन्त मजबूत होते हैं। इनमें पर्याप्त प्रतिरकन्दता एवं प्रत्यास्थता पायी जाती है। इस मशीन से फरयुक्त वस्त्र भी बनाये जाते हैं। ये सौन्दर्ययुक्त एवं असली फर का आभास देते हैं। इन फर युक्त वस्त्रों का रख रखाव, सफाई-धुलाई संग्रह आदि आसान होता है क्योंकि यह कृत्रिम रेशों से बने होते हैं। इनमें कीड़े, फफूँदी, सूक्ष्म जीवाणुओं का भी कोई प्रतिकूल हानिकारक प्रभाव नहीं पड़ता है।

संदर्भ (Reference)-

वस्ता विज्ञा एवं परिधान - डा० बी. के बखशी
परिधान वस्त्र विज्ञान एवं संसाधन प्रबन्ध - डा०
रीना खनूजा

The image features a central graphic with the text "THANK YOU" in white, bold, uppercase letters. The text is set within a diamond-shaped area with a vertical gradient from purple at the top to pink at the bottom. This central element is surrounded by a dark, repeating pattern of interlocking shapes that resemble a honeycomb or lattice structure. The background of the entire image is a scenic mountain landscape, showing rolling hills, valleys, and distant mountain ranges under a cloudy sky. The lighting suggests a soft, golden hour or dawn/dusk setting. The overall composition is balanced and visually appealing, combining natural beauty with a clear message of gratitude.

**THANK
YOU**